IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

वेद और पर्यावरण के सतत् विकास की अवधारणा

सुभाष चन्द्र
सहायक आचार्य (इतिहास)
रयान कॉलेज फॉर हायर एजुकशन, हनुमानगढ़

सारांश – वेदों में पर्यावरण संरक्षण का गहन ज्ञान निहित है, जो प्रकृति और मानव के बीच संतुलन बनाए रखने की शिक्षा देता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में पर्यावरणीय तत्वों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाशकृके महत्व को दर्शाया गया है तथा इनके संरक्षण की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया है। वेदों में पृथ्वी को माता के रूप में वर्णित किया गया है, जल को जीवनदायी तत्व माना गया है, वायु की शुद्धता पर बल दिया गया है, तथा वृक्षों और जैव विविधता के संरक्षण की महत्ता को रेखांकित किया गया है। यज्ञ, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और संतुलित उपभोग जैसे सिद्धांतों के माध्यम से वैदिक काल में पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया। वैदिक दृष्टि में प्रकृति को 'माता' और मनुष्य को उसका 'पुत्र' कहा गया है, जिससे पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक "सतत् विकास" के सिद्धांत अर्थात वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षाकृसे पूर्णतः संगत है। वैदिक ग्रंथों में पशु पक्षियों को जीवन का अभिन्न अंग माना है। वेदों में 'ऋत' (प्राकृतिक नियमों का पालन) और 'अहिंसा' (प्रकृति के प्रति अहित न करना) जैसे सिद्धांत पर्यावरणीय संतुलन की आधारशिला हैं। इस प्रकार, वैदिक साहित्य न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं बल्कि वे आधुनिक पर्यावरण दर्शन और सतत् विकास की अवधारणा के भी प्राचीन स्रोत हैं। ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए पर्यावरण को बचना जरूरी है। वैदिक ज्ञान को आत्मसात करते हुए पर्यावरण का संरक्षण करना अनिवार्य है। पर्यावरण में विकार उत्पन होने से मानव को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान मानव के द्वारा अगर वैदिक ज्ञान का महत्व नहीं समझा गया तो उसे दूरगामी परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

मुख्य शब्द – वेद, सतत् विकास, ऋत, पंचमहाभूत, जैव विविधता

भूमिका – सतत् विकास की अवधारणा का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना है, जबकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और संरक्षण भी करना है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में प्रकृति और मानव के बीच संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया है। वेद, जिसमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ग्रंथ सम्मिलित हैं, पर्यावरण संरक्षण के गहन ज्ञान से परिपूर्ण है। इन ग्रंथों में न केवल प्रकृति के तत्वों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की महत्ता को रेखांकित किया गया है, बल्कि इनके संतुलन और संरक्षण के लिए अनेक नियम एवं विधियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं। उपनिषदों में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना गया है, जिससे पर्यावरण के प्रति एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित होता है। सतत् विकास का मूल वेदों में श्त्यागश और श्संतोषश में निहित है। यह संसाधनों के सीमित उपयोग और लालच से बचने पर जोर देता है, जो आधुनिक सतत् विकास की आधारशिला है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-33883

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा

1. पृथ्वी का संरक्षण – वेदों में पृथ्वी को 'माता' (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः – अथर्ववेद) कहा गया है। इसका तात्पर्य है कि मनुष्य को अपनी माता के समान पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए। ऋग्वेद में कहा गया है कि हमें पृथ्वी का दोहन संतुलित रूप से करना चाहिए ताकि इसकी प्राकृतिक संपदा नष्ट न हो। यह संदेश देता है कि हमें भूमि और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। ऋग्वेद में कहा गया है कि –

पृथिवीं दुहितरं कृष्णमध्यमा वसूनां विश्वरूपाणि द्यावापृथिवी देवीरुपस्थे।

उत संगच्छ यथासुखं गातुं यत्र नो अन्यः कस्यचित् प्रभूतोऽवताति॥

इस श्लोक का अर्थ है जो पृथ्वी को अपनी पुत्री रूप बनाती है, जिसके मध्य में काली उर्वरक मृदा है, जो समस्त धन धान्यो से पूर्ण है। समस्त रूपों को स्वर्ग और पृथ्वी इन देवियों की गोद में रखती है। और (हे मनुष्यो!) अपनी सुख–सुविधा के अनुसार उस मार्ग पर चलो, जहाँ कोई भी दूसरा प्रचुर (शत्रु/अवरोध) हमें हानि न पहुँचा सके।"

सामवेद में पृथ्वी को माता के रूप में देखा गया है जो जीवन का पोषण करती है। यज्ञ में भूमि को खोदना या प्रदूषित करना वर्जित है। यह मिट्टी संरक्षण की अवधारणा है अत्यधिक कृषि या खनन से बचें।

2. जल संरक्षण – जल को जीवन का आधार माना है और वेदों में इसे पवित्र और पूजनीय बताया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है, आपः सन्तु पयस्विनीः, अर्थात् जल हमें पोषण देने वाला होना चाहिए। वेदों में नदियों को देवी के रूप में पूजा गया है। गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, चिनाब, सतलुज और झेलम जैसी नदियों का वेदों में वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में जल को जीवन का स्रोत कहा गया है और इसे शुद्ध बनाए रखने की प्रेरणा दी गई है।। यजुर्वेद में कहा गया है कि हमें नदियों, झीलों और जलस्रोतों को शुद्ध और प्रदूषणमुक्त रखना चाहिए। यह विचार जल संसाधनों की सुरक्षा और शुद्धता बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

ऋग्वेद में 'अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजं' के रूप में जल का विशेष महत्व बताया गया है। इसका अर्थ है कि जल मानवता के लिए अमृत की तरह महत्वपूर्ण है और जल में चिकित्सा की शक्ति होती है। जल हमारे शरीर के लिए आवश्यक है और इसे उपयोग में लाने से हम अपने शरीर को शुद्ध और स्वस्थ रख सकते हैं। यह मंत्र हमें जल की महत्त्वपूर्णता और उपयोगिता को याद दिलाता है।

अथर्ववेद के अनुसार

"आपो हि स्थ मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे"

अर्थात हे जल, तुम जीवनदायिनी होय हमें शक्ति प्रदान करो

सामवेद में जल को औषधि और जीवन का आधार माना गया। यज्ञ में शुद्ध जल का उपयोग अनिवार्य है। यह जल संरक्षण और शुद्धता पर बल देता है नदियों, तालाबों को प्रदूषित न करें।

3. वायु और वायुमंडल का संरक्षण – वेदों में वायु की स्तुति की गई है और उसे रोगों को नष्ट करने वाला बताया गया है। "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद 1.89.1) जैसे मंत्रों में शुभ विचारों और शुद्ध वायु के आगमन की कामना की गई है, जो वायु प्रदूषण से बचाव की चेतना को दर्शाता है।

वेदों में वायु को देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

ऋग्वेद के अनुसार

"ऋतं च सत्यं चाभिद्दात् तपसोऽध्यजायत"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

अर्थात ऋतं वह प्राकृतिक नियम है जो सूर्योदय, मौसम चक्र, जल चक्र, जैव चक्र को नियंत्रित करता है। यह आधुनिक इकोलॉजी के होमियोस्टेसिस (संतुलन) से तुलनीय है।

अथर्ववेद में वायु को जीवनदायी और पवित्र बताया गया है। यजुर्वेद में शुद्ध वायु के लिए प्रार्थना की गई हैकृ'वातावरणं शुद्धं भवतु', अर्थात् हमारा वायुमंडल शुद्ध रहे। यह संकेत करता है कि वैदिक काल में वायु प्रदूषण से बचने के लिए नियम बनाए गए थे। यजुर्वेद में स्वच्छ वायु को मानव स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य बताया गया है। इसमें वायु को शुद्ध और ताजगी से भरपूर रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। बृहदारण्यक उपनिषद में वायु को 'प्राण' कहा गया है और इसकी शुद्धता पर बल दिया गया है। यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों ने वायु प्रदूषण के खतरों को पहचाना था। सामवेद में वनस्पतियाँ पृथ्वी की संतान हैं और मनुष्य को औषधि, भोजन, ऑक्सीजन देती हैं।

ऋग्वेद में कहा गया है कि

"वातस्य नु महिमानं रथस्य रुजन्नहानि विदथानि साधन"

अर्थात वायु की महिमा रथ के समान हैय वह दिन–रात कार्य करता है।

4. वन संरक्षण और वृक्षों का महत्व – वैदिक साहित्य में वृक्षों को देवताओं के समान माना गया है। ऋग्वेद में औषधीय पौधों की महिमा का वर्णन किया गया है, जबकि यजुर्वेद में वृक्षों को न काटने की सलाह दी गई है। वेदों में वृक्षों और वनों को विशेष महत्व दिया गया है। यजुर्वेद में कहा गया है कि वृक्षों का रोपण और संरक्षण करना पुण्य का कार्य है। वृक्षों को देवता के समान माना गया है, जैसे पीपल को विष्णु का स्वरूप, तुलसी को लक्ष्मी का स्वरूप व वटवृक्ष को ब्रह्मा का प्रतीक माना है। अथर्ववेद में वृक्षों को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना गया है और उनके संरक्षण की आवश्यकता बताई गई है। अथर्ववेद में वनों की महत्ता का वर्णन किया गया है। वनों को बचाने और उनकी संरक्षा करने के लिए उपाय बताए गए हैं। वनों के लिए प्रार्थनाएं करने और उन्हें संरक्षित रखने का संदेश दिया गया है।

5. जैव विविधता एवं पशु संरक्षण – वैदिक ग्रंथों में पशु–पक्षियों को भी जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। अथर्ववेद में सभी जीवों की रक्षा का संदेश दिया गया है। ऋग्वेद में बताया गया है कि संपूर्ण सृष्टि एक संतुलित चक्र में कार्य करती है और इसमें सभी जीवों की समान भूमिका होती है।

6. अग्नि का महत्व – वेदों में अग्नि को एक प्रमुख देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। जो मानव और ईश्वर के बीच एक माध्यम का काम करता था। अग्नि को वेदों में शुद्धि और ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। ऋग्वेद में अग्नि को पिता के समान कल्याण करनेवाला कहा गया है। अग्नि को ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। ऋग्वेद में अग्नि को जल और जीवन शक्ति का स्रोत कहा गया हैरू "अपन पृथमाशि..." (अग्नि पृथ्वी और आकाश की तरह विस्तार करता है)। होमा थेरेपी या अग्निहोत्र जैसे अनुष्ठान वायु और मिट्टी को शुद्ध करते हैं, जो प्रदूषकों को नष्ट करते हैं। आकाश को सभी चीजों का माध्यम माना गया है, जहाँ कुछ भी अलगाव में नहीं रहता। ऋग्वेद में सूर्य को 'जगत चक्षु' (दुनिया की आँख) कहा गया है, जो जीवन को बनाए रखता है।

7. सामाजिक सतत् विकास का आधार – वेदों में सतत् विकास केवल प्रकृति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव समाज के कल्याण को भी प्राथमिकता देता है। अहिंसा का सिद्धांत केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें प्राणी मात्र और प्रकृति के प्रति हिंसा न करने का भाव भी निहित था, जो पारिस्थितिक न्याय का आधार है।

समन्वय और सह–अस्तित्वरू यजुर्वेद में संकल्प है– "द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिः, आपः शान्तिः, ओषधयः शान्तिः... शान्तिरेव शान्तिः।"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

इसका अर्थ है कि आकाश, अंतरिक्ष, पृथ्वी, जल, वनस्पतिकृसब में शांति हो, सब संतुलित रहें। यह समग्र पर्यावरण संतुलन की कामना करता है, जो सामाजिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।

वैदिक रीति–रिवाज और पर्यावरण संरक्षण

1. यज्ञ एवं पर्यावरण शुद्धि – यज्ञ वैदिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण को शुद्ध करना था। यज्ञों में औषधीय वृक्षों की लकड़ियाँ और घी का प्रयोग किया जाता था, जिससे वायुमंडल में शुद्धि होती थी और वर्षा की संभावना बढ़ती थी। सामवेद में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को देवताओं के रूप में पूजा जाता है। ये यज्ञ में आवश्यक हैं, इसलिए इनका दुरुपयोग निषेध है। यज्ञ से वर्षा होती है। यह कार्बन चक्र और वर्षा संरक्षण को दर्शाता है।

2. पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकें – वैदिक काल में जल संचयन के लिए कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब और जलाशयों का निर्माण किया जाता था। यह जल संरक्षण की एक महत्वपूर्ण विधि थी, जिससे सूखे की स्थिति में भी जल उपलब्ध रहता था।

3. नैतिकता एवं धर्म के माध्यम से पर्यावरण चेतना – वैदिक ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण को धार्मिक कर्तव्य के रूप में स्थापित किया गया है। इसमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की परंपरा थी, जिससे लोग पर्यावरण का सम्मान करते थे और इसे संरक्षित रखने का प्रयास करते थे। मानव को सृष्टि का केंद्र न मानकर एक भाग माना गया है। यह विचार आज की 'इको–सेंट्रिक' अवधारणा से मेल खाता है, जिसमें संपूर्ण प्रकृति को सम्मान देने की बात की जाती है।

निष्कर्ष

वेदों में पर्यावरण संरक्षण के अनेक गूढ़ सिद्धांत निहित हैं। इन ग्रंथों में प्रकृति को देवतुल्य मानकर उसके साथ सामंजस्य बनाए रखने की शिक्षा दी गई है। आज के समय में, जब पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर होती जा रही हैं, वेदों के ज्ञान को पुनः अपनाकर प्राकृतिक संसाधनों का सतत और संतुलित उपयोग किया जा सकता है। यदि हम वेदों की परंपराओं से सीख लें, तो आधुनिक समाज में भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। वेदों में पर्यावरण संरक्षण को एक आध्यात्मिक कर्तव्य के रूप में देखा गया है। इनमें प्रकृति, मनुष्य और ब्रह्म के बीच गहरा संबंध बताया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण की रक्षा केवल भौतिक आवश्यकताओं के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी आवश्यक है। यदि हम वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करें, तो पर्यावरणीय संकटों का समाधान प्राप्त किया जा सकता है और एक संतुलित, स्वस्थ तथा समृद्ध जीवन जीया जा सकता है।

संदर्भ–ग्रंथ सूचि –

1. ऋग्वेद, 10.18.10, 7.49.2, 1.164.41, 10.97.1, 7.49.2, 1.23.248, 1.105.12:, 10.168.1:
2. यजुर्वेद, 5.43, 36.12, 16.53, 16.54, 34.37
3. अथर्ववेद 12.1.12, 11.4.15, 5.4.3, 12.1.45, 4.27.4:
4. सामवेद 1.1.1, 2.3.1, 4.1.1–5, 1.4.1, 2.1.1
5. ऋग्वेद संहिता (संस्कृत एवं हिंदी अनुवाद). (2018). राल्फ टी.एच. ग्रिफिथ (अंग्रेजी अनुवाद)य दयानंद सरस्वती (हिंदी). आर्य समाज प्रकाशन.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

6. अथर्ववेद संहिता (द्विभाषी). (2020). पं. श्रीराम शर्मा आचार्य. युग निर्माण योजना, मथुरा.
7. यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता). (2015). स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती. विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, दिल्ली.